चाबहार के अवसर और चुनौतियाँ

द हिन्दू

पेपर- II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

भारत और ईरान के बीच हाल ही में संपन्न हुए अनुबंध ने कई सुर्खियाँ बटोरी हैं, जिसके तहत नई दिल्ली को चाबहार बंदरगाह पर शाहिद-बेहस्ती टर्मिनल में निवेश करने और उसे अगले 10 वर्षों तक संचालित करने का अधिकार दिया गया है। बंदरगाह दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करने वाली प्रमुख परियोजना बनी हुई है। यह सौदा पश्चिम एशिया में ऐसे अनिश्चित समय में हुआ है जब गाजा में युद्ध लगातार जारी है, इजरायल-ईरान के बीच तनाव गंभीर बना हुआ है और ईरान के राष्ट्रपति और विदेश मंत्री की हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु ने तेहरान में घरेलू राजनीति को चुनौती दी है।

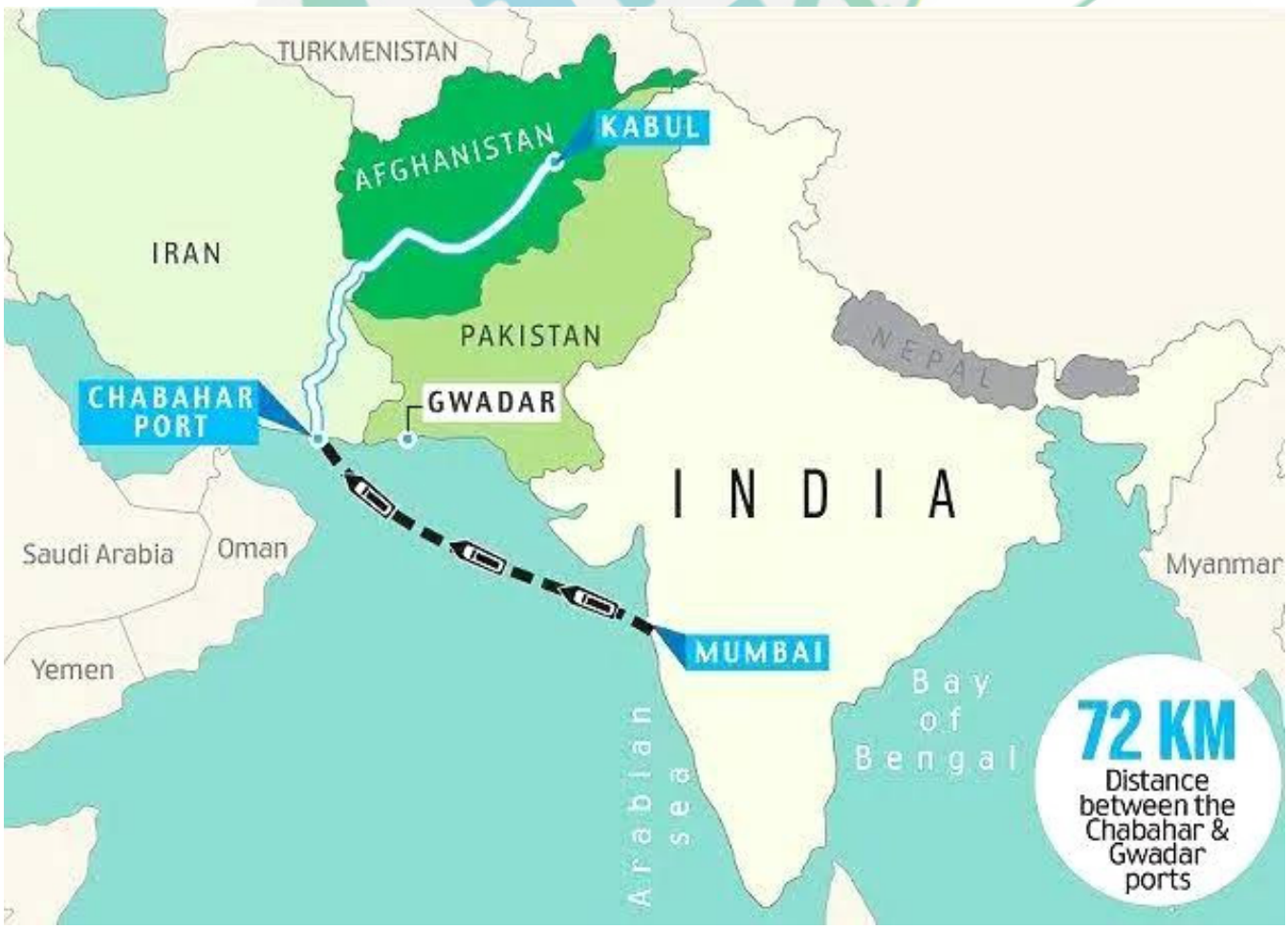

भारत की सोच का प्रतिनिधित्व

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि चाबहार परियोजना आर्थिक और रणनीतिक दोनों ही कारणों से एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके मूल में, चाबहार, भारत के लिए, एक विस्तारित पड़ोस के दृष्टिकोण से इसकी सोच का प्रतिनिधित्व करता है, न कि जरूरी नहीं कि यह पश्चिम एशिया के दृष्टिकोण का हिस्सा हो। यह बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे का एक आधार है, जो पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए भारत को मध्य एशिया और रूस से जोड़ने की दिशा में एक परियोजना है। इसके अलावा, चाबहार अफगानिस्तान की 'नई' वास्तविकताओं के साथ भी चतुराई से जुड़ा हुआ है। काबुल में तालिबान के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने भी बंदरगाह के पीछे अपना समर्थन दिया है, 35 मिलियन डॉलर के निवेश की पेशकश की है क्योंकि यह विकल्प सुरक्षित करने और कराची या चीन समर्थित ग्वादर जैसे पाकिस्तानी बंदरगाहों पर आर्थिक रूप से निर्भर न होने की तलाश में है। नवंबर 2023 में, तालिबान नेता मुल्ला बरादर ने चाबहार का दौरा किया, जिसकी पृष्ठभूमि में शाहिद-बेहस्ती दिखाई दे रही थी।

भारत और ईरान के लिए द्विपक्षीय रूप से, चाबहार भी दोनों राज्यों के बीच चुनौतियों का एक लक्षण है। हालांकि इस परियोजना के लिए सार्वजनिक रूप से काफी समर्थन किया जा रहा है, और अच्छे कारणों से, अगर चाबहार नहीं होता, तो आज भारत-ईरान संबंध बेहद शुष्क दिखते। कारण बहुआयामी हैं और दोनों देशों के अपने राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और भू-राजनीतिक हितों के विचारों से जुड़े हैं। चाबहार से परे परियोजनाओं और आर्थिक सहयोग का विस्तार करने के बजाय, कई पुरानी परियोजनाओं, जैसे कि गैस क्षेत्र फरजाद-बी, जिसे भारतीय राज्य के स्वामित्व वाली उद्यम ओएनजीसी विदेश द्वारा खोजा गया था, को अब बंद कर दिया गया है। एक अन्य पुराने द्विपक्षीय मंच, ईरानोहिंद शिपिंग कंपनी को प्रतिबंधों के कारण 2013 में भंग कर दिया गया था। चाबहार, एक विरासत परियोजना है, जिसकी नींव 2003 तक जाती है।

कूटनीति का प्रतिबिम्ब

चाबहार में भारत की भूमिका और ईरान के लाभ के इर्द-गिर्द आज की भू-राजनीति एक दिलचस्प अध्ययन का विषय है। इस सौदे के इस नवीनतम संस्करण पर हस्ताक्षर किए जाने के कुछ समय बाद ही इजरायल और ईरान के बीच मिसाइलों का आदान-प्रदान हुआ और दोनों देश पूर्ण पैमाने पर संघर्ष के करीब पहुंच गए। इस बीच, भारत के अडानी समूह ने भी इजरायल में एक बड़े बंदरगाह परियोजना में निवेश किया है। कंपनी ने भूमध्य सागर पर इजरायल के हाइफा बंदरगाह को 1.2 बिलियन डॉलर में खरीदा है। यह आंशिक रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, इजरायल और अरब भागीदारों, जैसे कि I2U2 और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे के साथ नए राजनयिक और आर्थिक प्रयासों में भारत की भागीदारी के कारण भी संभव हुआ।

यह तथ्य कि हाइफा में भारत की भागीदारी चाबहार सौदे के लिए बाधा नहीं बनी, न केवल भारतीय कूटनीति का प्रमाण है, बल्कि यह अमेरिका की भी मान्यता है कि नई दिल्ली को प्राप्त इस प्रकार की पहुंच वाशिंगटन के लिए लाभदायक है, न कि हानिकारक।

चाबहार के खिलाफ संभावित प्रतिबंधों पर अमेरिका की हालिया टिप्पणी अदूरदर्शी है। ईरान के साथ भारत के संबंध और चाबहार के विकास की निरंतरता, जो मध्य एशिया और यहां तक कि अफगानिस्तान जैसे कठिन राजनीतिक क्षेत्रों तक पहुंच प्रदान करती है, एकीकरण का एक महत्वपूर्ण स्तर ला सकती है और चीन समर्थित परियोजनाओं के विकल्प बनाने में मदद कर सकती है। सार्वजनिक चर्चा के बावजूद, चीन की भारी वित्तीय ताकत और ईरान के साथ 2021 का रणनीतिक समझौता, तेहरान को स्वचालित रूप से बीजिंग के अधीन नहीं बनाता है। ईरान एक सर्वोत्कृष्ट अस्तित्ववादी राज्य है और भू-राजनीति की अपनी रणनीति में विविध प्रकार के कार्ड खेलता है।

बिडेन प्रशासन को भारत-ईरान संबंधों और चाबहार को केंद्र में रखकर निपटने के बारे में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के सिद्धांत का आंख मूंदकर पालन नहीं करने से लाभ होगा। नई दिल्ली ने ईरान से तेल आयात पूरी तरह बंद करके श्री ओबामा को बहुत अधिक गुंजाइश देकर अपने हाथ जला लिए। इसने तेहरान को, जो दशकों से भारत के शीर्ष

दो तेल आपूर्तिकर्ताओं में से एक था, शीर्ष 10 से बाहर कर दिया। भले ही भारत की सोच परमाणु समझौते की वार्ता के इर्द-गिर्द वाशिंगटन में प्रभाव बनाने की रही हो, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रम्प और 2018 में संयुक्त व्यापक कार्य योजना (जेसीपीओए) से उनके कार्यकाल में अमेरिका के एकतरफा बाहर निकलने ने यह पुनः निर्धारित किया कि उसके बाद गैर-पक्षपातपूर्णता और महत्वपूर्ण अमेरिकी विदेश नीतियों की स्थिरता को कैसे देखा जाना चाहिए।

द बिगर पिक्चर

अंत में, चाबहार के लिए, आगे बढ़ने पर विचार करने के लिए दो मुख्य बिंदु हैं। पहला, बंदरगाह परियोजना द्विपक्षीय संबंधों में एकमात्र प्रमुख भूमिका नहीं हो सकती। हितों का यह संकेन्द्रण अस्थिर है। दूसरा, अमेरिका को चाबहार के खिलाफ प्रतिबंधों पर उदार होने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। पश्चिम एशिया में समस्याग्रस्त ईरानी नीतियों के खिलाफ बंदरगाह को एक संपार्श्विक के रूप में देखना भारत की अपने विस्तारित पड़ोस के प्रति अपनी पहुंच की बड़ी तस्वीर की सटीक समझ नहीं होगी, जिससे बड़े अमेरिकी उद्देश्यों को भी लाभ हो सकता है।

इस बात पर ऐसे समय में विचार करना महत्वपूर्ण है, जब अमेरिका स्वयं ईरानियों के साथ न केवल स्विस मध्यस्थों के माध्यम से, बल्कि ओमान और कतर के माध्यम से भी एक चैनल बनाए हुए है।

प्रश्नः चाबहार बंदरगाह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. चाबहार, ईरान का एकमात्र समुद्री बंदरगाह है।
2. चाबहार में दो मुख्य बंदरगाह हैं, शाहिद कलंतरी एवं शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

Que. Consider the following statements with reference to Chabahar Port:

1. Chabahar is the only sea port of Iran.
2. There are two main ports in Chabahar, Shahid Kalantari and Shahid Beheshti ports.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्नः चाबहार बंदरगाह की भौगोलिक स्थिति की चर्चा करते हुए बताएं कि ये भारत के लिये महत्त्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में चाबहार बंदरगाह की भौगोलिक स्थिति को संक्षिप्त में समझाएं।
- दूसरे भाग में भारत के लिये इसके महत्त्व को समझाएं।
- अंत में अपने सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।